१७१. मेहेर प्रेमियो माथे धरलो

मेहेरके चरणोंने स्पर्शी यह सारी धरती ॥
मेहेर प्रेमियो माथे धरलो यह पावन माटी ॥धृ.॥

यही यही वह मेहेराबाद, यहाँ हुवे कितने आबाद ।
यहाँ ले रहे सबके प्रीतम चिरचिर विश्रांती ॥१॥

यही है पहला मेहेराश्रम, यहाँ मिटाये लाखो भ्रम
भवनिद्रासे उसने जगाया सबको दिनराती ॥२॥

Scanned by CamScanner

हर कण याद दिलाता है, गत इतिहास बताता है
यहाँ प्यार की बही है जमुना बही है वेदवती ॥३॥

यहाँ हुवे कितने सहवास, बुझी प्यारकी सबकी प्यास
स्मृतीसे तनमन हो रोमांचित, आँखे भर आती ॥४॥

किसका गुस्सा झगडा है, एक प्यार से तोडा है
यहाँ जुडाई अमर अमर वह प्यारभरी नाती ॥५॥

ईश्वरमस्त यहाँ नहलाये, मायामस्त यहाँ धुलवाये
अमृतपान कराया देकर नवजीवन कांती ॥६॥

आदी अनेक यहाँपर पनपे, भाई मास्टर डॉक्टर चमके
कव्वाली और भजन हुवे जो गूँज अभी उठती ॥७॥

खेले कूदे दौडे भागे, छोटे बडे मेहेर रत लागे
थाप मज़ाक मस्करी और शिक्षा बाते सब बीती ॥८॥

यहाँ प्रभूने खुद है लिखा, धुनीपर अजरामर गाथा
जिसको पढकर जग जानेगा गूढ सभी अंती ॥९॥

महंमदका दादा वह प्यारा, अली शाहका साहेब न्यारा
अरणगांवका बाबा सबकों दियो प्रेमपाती ॥१०॥

धरतीका यह महान तीरथ, आयेंगे चहू दिशासे यात्रिक
चरणोमें झुककर मेहेरके पायेंगे शांती ॥११॥

अनंतकी सब कथा है भारी, लिखते कहते जगती हारी
मधुसूदन बस इतना कहता, याद नही जाती ॥१२॥

Scanned by CamScanner